ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 4 अंक : 3 फरवरी-मार्च 2014 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा
श्री सुरेश अग्रवाल (दयाल बाग)

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।

आचार्य चन्दन लाल पाराशर

श्रीमद्देवीभागवत महापुराण
स्तवन

नमो देवि विश्वेश्वरी प्राणनाथे सदानन्दरूपे सुरानन्ददे ते।
नमो दानवान्तप्रदे मानवानामनेकार्थ दे भक्तिगम्यस्वरूपे।।
न ते नाम सख्या न ते रूपमीदृक्तथा कोडपि वेददिदेवस्वरूपे।
त्वमेवासि सवैषु शक्ति स्वरुपा प्रजासृष्टिसंहारकाले सदैव।।
न वा ते गुणानामियंत्ता स्वरूंप वयं देवि जानीमहे विश्ववन्धे।
पा पात्रमित्येव मत्वा तथा स्मानभयेभ्यः सदा पहि पांतु समर्थे।।

हे विश्वेश्वरि! हे प्राणों की स्वामिनी! सदा आनन्द रूप में रहने वाली तथा देवताओं को आनन्द प्रदान करने वाली हे देवि! आपको नमस्कार है। दानवों को अन्त करने वाली, मनुष्यों की समस्त कामनाएँ पूर्ण करने वाली तथा भक्ति के द्वारा अपने रूप का दर्शन देने वाली हे देवि! आपको नमस्कार है। है आदि देवस्वरूपिणी! आपके नामों की निश्चित संख्या तथा आपके इस रूप को कोई भी नहीं जान सकता है। सब में आप ही विराजमान हैं। जीवों के सृजन और संहारकाल में शक्ति स्वरुप से सदा आप ही कार्य करती हैं। हे देवि! हे विश्ववन्धे! हम लोग न आपके गुणों की सीमा जानते हैं और न आपका स्वरुप ही जानते हैं। अतः रक्षा करने में समर्थ हे देवि! हमें केवल अपना पा पात्र मानकर आप भयों से निरन्तर हमारी रक्षा करती रहें।

(श्रीमद्देवीभागवत महापुराण)

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा- से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN/2010/44791

के 700 मंत्रों से हवन, 2 वर्ष से 10 वर्ष तक की आयु के कन्या लाँगुर का पूजन, ब्राह्मण भोजन एंव दक्षिणा देने के बाद माँ भगवती से क्षमा याचना करनी चाहिए।

यदि इस विशेषांक का प्रतिदिन पाठ करने से किसी भी उपासक को **माँ भगवती की कृपा किसी भी रूप में** प्राप्त हो जाती है, तो यह अणु अणु में स्थित माँ भगवती की बड़ी कृपा होगी और विशेषांक के प्रकाशन का **उद्देश्य सार्थक** होगा। आशा है, **भविष्य निर्णय** के पाठक इस अंक को अपने घर के पूजा स्थान पर ही रखेंगे, अन्यत्र नहीं।

अखण्ड ज्योति का महत्व

नवरात्रों में अखण्ड ज्योति जलाने का विधान है। हर मंदिर एंव निवास स्थान पर अखण्ड ज्योति जलाई जाती है। अखण्ड ज्योति का हिन्दु धर्म ग्रन्थों में विशेष उल्लेख है। मन्त्र महोदधि के अनुसार दीपक के सामने मन्त्रों के उच्चारण के अच्छे परिणाम होते हैं। स्कन्द पुराण के अनुसार दीपक की ज्योति सूर्य, चन्द्रमा एंव अग्नि की रोशनी से भी उत्तम मानी गई है।

अखण्ड ज्योति ईश्वर में हमारी अटूट श्रद्धा को दर्शाता है। अखण्ड ज्योति का प्रकाश हमारे अंधकारमय एंव अज्ञानमय जीवन में ज्ञान की रोशनी लाता है। अखण्ड ज्योति हमें कभी भी उम्मीद न छोड़ने की प्रेरणा देती है। अखण्ड ज्योति की बत्ती हमारे घमंण्ड की प्रतीक होती है एंव तेल नकारात्मक शक्तियों का प्रतीक है। अखण्ड ज्योति में धीमे–धीमे यह दोंनों नष्ट हो जाती हैं। अखण्ड ज्योति देव पूजन एंव मन्त्र उच्चारण में एकाग्रता लाती है।

"दीपम घृत युतम दक्ष तेल युतह चः वामतः"

अर्थात् घी का दीपक देवी के दाहिने हाथ की ओर जलाऐं एंव तेल का दीपक देवी के बांये हाथ की ओर जलाना चाहिये। अखण्ड ज्योति का दीपक तांबे, पीतल या सोने का होना उचित है। अखण्ड ज्योति की बत्ती सही करने से पहले एक छोटा दीपक जला लें। अखण्ड ज्योति की बत्ती सही कर के एंव तेल डालने के बाद छोटे दीपक को तेल या घी से बन्द करें, न कि हवा से।

कलश स्थापना एंव पूजन

नवरात्रि में कलश स्थापना के दिन प्रातः ही घर के सभी सदस्यों को ब्रह्म मुहर्त में उठ जाना चाहिए। लाल आसन पर पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके शुद्ध धोती पहन कर ऊपर गुरू नामी अथवा रामनामी दुपटटा ओढकर बैठ जाना चाहिए।

सर्वप्रथम एक चौकी पर लाल रेशमी कपड़ा बिछाकर मूर्ति को प्रतिष्ठित करना चाहिए। चौकी के समक्ष कलश स्थापना के लिए भुर भुरी मिट्टी की एक बेदी बनानी चाहिए, जिसमें भीगे हुए जौ या धान के दाने घने–घने बिखेर देने चाहिए। बेदी के बीच में कलश स्थापना से पूर्व एक अष्टदल कमल के फूल की अल्पना जिसे **चौक पूरना** कहते हैं, विभिन्न रंगों (अबीर, गुलाल, रोली, आटा, चावल या रंगोली के विभिन्न रंग) से सुसज्जित कर दें। कलश के ऊपर गाय के गोबर से एक ओर गणेश जी का चित्र बना दें और उसे अन्य मांगलिक चिन्हों से सजा दें।

इसके पश्चात् कलश में पंच धातु (सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल व लोहा,) डाल दें। पंच औषधि भी डाल दें जैसे सतावर, आंवला हर, बहेड़ा, हल्दी, केसर, लौंग, जावित्रि, चंदन, अगर–तगर आदि। इसके अतिरिक्त कलश में सिक्के, कमलगट्टे एंव नवरत्न डालने का भी विधान है। कलश को गंगाजल एंव शुद्ध जल से परिपूर्ण कर दें। उसके ऊपर पंच पल्लव लगाकर उस पर किसी कटोरे या मिट्टी के पात्र में चावल भर कर रख दें।

सूखे नारियल को लाल कपड़े में लपेटकर कलश के ऊपर रखे कटोरे में रख दें। इस बात का ध्यान रखें कि लाल कपड़े में लपेटे हुए नारियल को सीधा खड़ा रखें जैसे कि वह देवी की प्रतिमा का स्वरूप हो। लाल कपड़े को भी इस तरह उढ़ायें कि वह सिर पर ओढ़ी हुई चुनरी की तरह लगे। अब निम्न मंत्र बोलते हुए कलश को बेदी के मध्य बनी चौकी पर स्थापित कर दें:–

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

इसके पश्चात् पूर्ण विधि विधान से कलश का पूजन करें। सर्वप्रथम स्नान करायें, फिर रोली, वस्त्र, उपवस्त्र, चंदन, सिंदूर, इत्र, अक्षत व पुष्प अर्पण करें। इसके वाद धूप–दीप दिखाँए। जो भी अर्पित करें– उसका नाम लेकर **समर्पयामि** कहें। फिर नैवेद्य का भोग लगाकर माँ दुर्गा की आरती करें।

कलश तथा वेदी में प्रतिदिन कुछ जल की मात्रा अवश्य डालते हैं ताकि कलश सूख न जाये और वेदी में पड़ें अंकुर फूटने लगें।

'कल्याण' में प्रकाशित–

श्रीमद्देवीभागवत महापुराण का संक्षिप्त भावानुवाद

सुरेश अग्रवाल
दयालबाग

श्रीमद्देवीभागवत महापुराण–माहात्म्य

अठारह पुराणों की परिगणना में श्रीमद्देवीभागवत महापुराण का वेदतुल्य पाँचवा स्थान है। यह पावनपुराण धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्रदान करने वाला है। इस पावन पुराण का प्राकट्य भगवती श्री जगदम्बिका के श्रीमुख से निकले आधे श्लोक (सर्वं खल्विदमेवाहं नान्य दस्ति सनातनम्– अर्थात् सब कुछ मैं ही हूँ और दूसरा कोई भी सनातन नहीं है।) से हुआ। तत्पश्चात् उसी आधे श्लोक का विस्तार हुआ। **श्री वेदव्यास जी द्वारा रचित इस पुराण में 12 स्कन्ध, 318 अध्याय और 18000 श्लोक हैं।**

पूर्व काल में राजा जनमेजय के पिता राजा परीक्षित् तक्षक नाग द्वारा काट लिए गए। अतः अपने पिता की शुभगति के लिए जनमेजय ने श्री वेदव्यास जी से इस पवित्र पुराण का श्रवण किया। नौ दिन का अनुष्ठान पूर्ण हो जाने पर राजा परीक्षित ने उसी समय दिव्य रूप धारण करके माँ भगवती का सालोक्य प्राप्त किया।

इस महापुराण की कथा सुनने में महीनों तथा दिनों का कोई नियम नही है। वैसे चैत्र, आषाढ़, क्वार तथा माघ– इन चारों महीनों के शुक्ल पक्ष में पड़ने वाले नवरात्रों में इस पुराण के पठन–श्रवण से विशेष फल प्राप्त होता है। जिस घर में प्रतिदिन श्रीमद्देवीभागवत पुराण का पूजन किया जाता है, वह घर तीर्थस्वरूप हो जाता है और उसमें रहने वालों के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

श्रवण विधि एवं कथा वाचक तथा श्रवण कर्ता के लिए नियम

श्रीमद्देवीभागवत को चारों वर्णो के गृहस्थ, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ, सन्यासी एंव शक्ति उपासक सभी सकाम अथवा निष्कामभाव से सुनने के अधिकारी हैं। **श्रोता** को चाहिए कि वह ब्रह्मचर्य का पालन करे, पृथ्वी पर सोये, सत्य बोले, पत्तल पर भोजन करे, भक्ति भाव रखे और माँ भगवती के चरणों में ध्यान लगाते हुए कथामृत का पान करे। **कथा वाचक** को संयमी, शास्त्रज्ञ, देवी की आराधना में सदैव तत्पर, निर्लोभी, शान्तचित्त, वक्तत्व गुणों से सम्पन्न और पौराणिक ब्राह्मण होना चाहिए।

श्रीमद्देवीभागवत का अनुष्ठान नवाह्न यज्ञ नौ दिन के बाद सम्पूर्ण होता है। कथा के समय श्रीमद्देवीभागवत एवं श्री दुर्गासप्तशती का मूल पाठ अनवरत करना चाहिए। कलश स्थापना, जबारे रोपण तथा अखण्ड ज्योति माँ भगवती के श्री विग्रह के सम्मुख मंत्रोचारण के बाद पवित्र संकल्प से प्रतिष्ठित करनी चाहिए। 2 वर्ष से 10 वर्ष तक आयु की कन्या (प्रतिदिन कन्या बदल 2 कर) का अभिषेक वस्त्र–फलादि से 9 दिन करना चाहिए। कथाव्रती को पीले या लाल वस्त्र पहनकर कथा श्रवण करनी चाहिए। नवाह्न यज्ञ में नौ दिन की कथा पूर्ण होने के बाद हवन, कन्या लाँगुर का पूजन, व्यास जी सहित देवी भागवत का पूजन एंव ब्रह्म भोज के बाद स्वयं प्रसाद ग्रहण करें और माँ भगवती से जाने अनजाने में हुई गलतियों व पापों की क्षमा माँगें।

प्रथम सकन्ध (20 अध्याय–1186 श्लोक)

शुकदेव जी का जन्म – प्राचीन काल में एक समय व्यास जी के मन में पुत्र प्राप्ति की इच्छा हुई। नारद जी ने उन्हें पुत्र प्राप्ति के लिए माँ भगवती की आराधना करने का परामर्श दिया। नारद जी का उपदेश सुनकर व्यास जी ने मेरूपर्वत पर वाग्बीज मंत्र (ऐं) का जप करते हुए 100 वर्षो तक भगवान शंकर और भगवती शिवा की आराधना की, जिससे प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने उन्हें पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया।

उस जप के फलस्वरूप शुकदेव जी का जन्म हुआ। जन्म लेते ही शुकदेव जी बड़े हो गये और बृहस्पति जी के पास विद्याध्ययन के लिए चले गये। वे अपने पिता व्यास जी की आज्ञा से राजा जनक के पास मिथिला पुरी चले गए। राजा जनक ने उन्हें गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने के लिए तार्किक उपदेश दिए कि भोगों को भोगते हुए भी अनासक्त हो सकते हो। तदनन्तर शुकदेव जी ने पितरों की कन्या पीवरी से विवाह किया। अपने चार पुत्रों तथा एक कन्या के विवाह के पश्चात् शुकदेव जी ने कैलाश पर जाकर तपस्या की और मुक्ति पद को प्राप्त किया। पुत्र वियोग से व्यास जी दुखी होकर अपनी माँ सत्यवती के पास चले गए, जहाँ उन्होंने माँ के आदेश पर नियोग विधि से धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर को उत्पन्न किया।

हयग्रीवावतार की कथा – एक समय की बात है कि भगवान विष्णु किसी शुभस्थान पर पद्मासन लगाकर बैठगये और अपना कण्ठ प्रत्यंचा चढ़े हुए धनुष पर टिका लिया था। संयोगवश उन्हें इसी अवस्था में गहरी नींद आ गई। कालान्तर में देवताओं ने एक यज्ञ करने का निश्चय किया। वे सभी ब्रह्मा और शिवजी के साथ यज्ञ पुरुष विष्णु जी के पास गये, तो उन्होने विष्णु जी को जगाना उचित नहीं समझा। यज्ञ भी आवश्यक है– इसलिए ब्रह्माजी ने दीमक को पैदा किया और उसे यज्ञ के आस पास गिरे हव्य को प्राप्त करने का अधिकार देकर, विष्णु जी के धनुष की डोरी को काट देने को कहा। उस डोरी के कटते ही भगवान विष्णु का सिर धड़ से अलग हो

शाप दे दिया और वे बच नहीं सके। राजा परीक्षित् की मृत्यु के बाद उनके पुत्र जनमेजय राजा बने। एक दिन उत्तंकमुनि ने जनमेजय को बताया कि कश्यप नामक ब्राह्मण मंत्रों के द्वारा आपके पिता को जीवित करने के लिए आ रहे थे, परन्तु तक्षक नाग ने उनको धन देकर मार्ग में ही वापस कर दिया– इसलिए तक्षक दोषी है। अतः आपको सर्पयज्ञ करके सर्पो का संहार कर अपने पिता का बदला लेना चाहिए। सर्पयज्ञ प्रारम्भ किया गया, जिसमें सहस्त्रों सर्प गिरकर मरने लगे। आस्तीक मुनि के समझाने पर राजा जनमेजय ने सर्पयज्ञ बन्द कर दिया। सर्पयज्ञ रोकने के बाद, राजा जनमेजय अपने पिता की सद्गति के उपाय करने लगे। वेद व्यास जी ने जनमेजय को देवी यज्ञ करने और श्रीमद्देवीभागवत महापुराण का श्रवण करने को कहा। अनुष्ठान पूरा होने के बाद जनमेजय के पितरों ने अक्षय स्वर्ग प्राप्त किया।

आस्तीक मुनि का जन्म – कश्यप ऋषि की कद्रू और विनता नाम की दो पत्नियाँ थी। कद्रू अपने सर्पपुत्रों के सहयोग और छल से विनता को अपनी दासी बनाकर नाना प्रकार से दुख देने लगी। सर्पो का आहार करने वाले विनता के पुत्र गरूण जी ने अपनी माँ को दासी भाव से मुक्ति दिलाने के लिए, स्वर्ग लोक से अमृत कलश लाकर विमाता कद्रू को दे दिया और विनता को दास्य भाव से मुक्त करा लिया। जब सभी सर्प स्नान के लिए चले गये, तभी इन्द्र ने उस अमृत कलश को चुरा लिया। अमृत कलश के पास बिछे कुश को सर्प अपनी जीभ से चाटने लगे, तो कुश के स्पर्श से वे दो जीभ वाले हो गये। जरत्कारू नाम के महामुनि और वासुकिनाग की बहन जरत्कारू से **आस्तीक** नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। उन्हीं आस्तीक मुनि ने अपने मातृपक्ष की रक्षा के लिए ही राजा जनमेजय का सर्पयज्ञ रूकवा दिया था। इस प्रकार शापित सर्पो की रक्षा आस्तीक मुनि द्वारा की गई।

एवमादितः स्कन्ध 2, अध्याय 32, श्लोक 1911

तृतीय स्कन्ध (30 अध्याय– 1747 श्लोक)

त्रिदेवों को भगवती के मणिलोक का दर्शन – मधुकैटभ के वध के बाद ब्रह्मा, विष्णु और शंकर इन तीनों देवताओं को माँ भगवती ने इन्द्र लोक, ब्रह्म लोक, कैलाश तथा बैकुण्ठ के दर्शन कराये। फिर वे भगवती के दिव्य मणिलोक में पहुँचे, जहाँ तीनों स्त्री बन गए। उसी स्त्रीवेष में तीनों ने माँ भगवती के चरणों के नरव में समस्त ब्रह्माण्ड के साथ स्वंय को भी देखा। त्रिदेवों की स्तुति से प्रसन्न होकर भगवती भुवनेश्वरी ने ब्रह्मा जी को महासरस्वती, विष्णु जी को महालक्ष्मी तथा शंकर जी को महाकाली नाम की शक्तियाँ प्रदान की। तत्पश्चात् मणि लोक से निकलते ही वे पुनः पुरूषरूप में हो गए। फिर उन्होंने बैकुण्ठ, कैलाश, ब्रह्मलोक, इन्द्र लोक, स्वर्ग आदि लोकों और सुमेरू आदि पर्वतों की रचना की। ब्रह्माजी ने मरीचि आदि मानसिक पुत्रों की सृष्टि की। मरीचि के पुत्र कश्यप हुए, जिन्होंने दक्षप्रजापति की तेरह कन्याओं से विवाह करके सृष्टि को फैलाया।

माँ भगवती का बीज मन्त्र **ऐं** है। सत्यव्रत नामक एक अनपढ ब्राह्मण ने इस मंत्र के बिन्दु रहित अशुद्ध उच्चारण से ही सिद्धि प्राप्त कर ली थी। उसने किरात के बाण से घायल एक सूअर को देखकर दयावश 'ऐ–ऐ' कहा। उस बिन्दु रहित बीज मंत्र के प्रभाव से वह समस्त विद्याओं का ज्ञाता बन गया।

सुबाहु तथा सुदर्शन की कथा– अयोध्या में भगवान राम से 15 वीं पीढ़ी के बाद ध्रुवसन्धि नाम के राजा थे। कलिंग राज वीर सेन की पुत्री मनोरमा उनकी बड़ी रानी और उज्जैन नरेश युधाजित् की पुत्री लीलावती उनकी छोटी रानी थी। मनोरमा के पुत्र सुदर्शन और लीलावती के पुत्र शत्रुजित थे। महाराज ध्रुवसन्धि की मृत्यु के बाद मन्त्रियों ने बड़े पुत्र सुदर्शन को राजा बनाना चाहा था, इधर शत्रुजित के नाना युधाजित अपने धेवते को राजा बनाना चाहते थे। इस बात पर वीर सेन और युधाजित में युद्ध छिड़ गया और वीरसेन मारे गये। मनोरमा अपने पुत्र सुदर्शन को लेकर महामंत्री विदल्ल के साथ महर्षि भारद्वाज के आश्रम चली गई और शत्रुजित को राजा बना दिया गया।

भारद्वाज जी के आश्रम में सुदर्शन ने **क्लीब** शब्द सुना तो वह स्वयं भी **क्ली क्ली** करने लगा। धीरे–धीरे वह काली बीज (क्लीं) के प्रभाव से भगवती का कृपापात्र बन गया। संयोग वश उसे एक दिन देवी का बाण तथा धनुष भी मिल गया। इधर काशी नरेश सुबाहु की कन्या शशीकला को भगवती ने स्वप्न में सुदर्शन को पति रूप में वरण करने की आज्ञा दी, जिसे उसने स्वीकार कर लिया। लेकिन उसके माता पिता राजी नहीं थे। स्वंयवर की तैयारी होने लगी। सुदर्शन, शत्रुजित और उसके नाना युधाजित भी आ गये। युद्ध की आशंका से शशीकला और सुदर्शन का गुप्त रीति से विवाह करा दिया गया। युधाजित और सुदर्शन में युद्ध छिड़ गया। भगवती की कृपा से सुदर्शन

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरुम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

कन्या को मथुरा ले आये। कन्या साक्षात् भगवती थी, जो कंस के हाथ से छूटकर आकाश में चली गई। भगवान कृष्ण ने अनेक लीलाएँ की और कंस के बाल पकड़कर उसको मार डाला। उग्रसेन मथुरा के पुनः राजा बने।

अपने जामाता कंस का बदला लेने के लिए जरासन्ध ने मथुरा पर आक्रमण कर दिया। श्री कृष्ण ने जरासन्ध को 17 बार पराजित किया। फिर जरासन्ध ने कालयवन को श्री कृष्ण का सामना करने के लिए उकसाया। श्री कृष्ण युद्ध के भय से सभी प्रजाजनों सहित द्वारका पुरी चले गये। इसके बाद श्री कृष्ण ने कालयवन को मुचुकुन्द के द्वारा धोखे से भस्म करवा दिया। तदनन्तर श्री कृष्ण ने रूक्मिणी, जाम्बवती, सत्यभामा, कालिन्दी, मित्रविन्दा, लक्ष्मणा, भद्रा तथा नाग्नजिती के साथ विवाह किया। रूक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न का शम्बरासुर ने प्रसूतिगृह से हरण कर लिया था। माँ भगवती के आशीर्वाद से प्रद्युम्न 16 वर्ष बाद शम्बरासुर को ही मारकर श्री कृष्ण के पास वापस आ गया। श्री कृष्ण स्वर्ग से सत्यभामा के लिए कल्पवृक्ष लेकर आये। सत्यभामा ने नारद को श्री कृष्ण दान में दे दिए, फिर सोने का कृष्ण दान में देकर उन्हें नारद से मुक्त कराया। जाम्बवती ने अपने लिए प्रद्युम्न जैसे पुत्र की याचना श्रीकृष्ण से की। इस पर श्रीकृष्ण ने भगवान शंकर की तपस्या की और उन्होंने प्रत्येक रानी से 10–10 पुत्र होने का वरदान प्राप्त किया। 100 वर्ष बीत जाने पर एक विप्र अष्टावक्र और गान्धारी के शाप के कारण सभी यादव आपस में लड़कर मर गये और कृष्ण व बलभद्र दिव्य लोक को चले गये।

एवमादितः स्कन्ध 4, अध्याय 87, श्लोक 5084

पंचम स्कन्ध (35 अध्याय - 2086 श्लोक)

महिषासुर आदि दैत्यों का वध– दानव दनु के दो पुत्र थे– रम्भ और करम्भ तथा रम्भ का पुत्र महिषासुर एक महिषी के गर्भ से पैदा हुआ था। दैत्य महिषासुर स्वर्ग पर अपना आधिपत्य करना चाहता था। तदनन्तर देवताओं को जीतकर वह इन्द्र बन बैठा और समस्त देवताओं के अधिकार छीन लिए। क्रोध के कारण ब्रह्मा, विष्णु और शंकर सहित सभी देवताओं के शरीर से तेजपुंज निकले, जो मिलकर एक नारी के रूप में परिणत हो गया। तदुपरान्त समस्त देवताओं ने माँ भगवती को आयुध और आभूषण समर्पित करके उनकी स्तुति की। देवी के प्रचण्ड अट्टहास को सुनकर महिषासुर समस्त असुरों के साथ युद्ध के लिए चल पड़ा। भंयकर युद्ध हुआ, जिसमें सभी सेनापतियों के साथ महिषासुर मारा गया। सभी देवताओं ने भगवती से वरदान प्राप्त किया कि संकट के समय स्मरण करने पर मैं तुम सबकी रक्षा करूँगी। देवी की आज्ञा से सूर्यवंशी अयोध्या महाराज शत्रुघ्न को महिषासुर के स्थान पर राज्याभिषेक कर दिया गया।

शुम्भ– निशुम्भ आदि का वध– पूर्व काल में शुम्भ और निशुम्भ नामक दो असुर भाई थे, जो बड़े बलवान और पराक्रमी थे। उनके पास महा दैत्य सुग्रीव, धूमलोचन, चण्ड मुण्ड, रक्तबीज सहित चतुरंगिणी सेना थी। दोनों दैत्यों ने ब्रह्मा जी से वरदान प्राप्त कर लिया था कि किसी भी पुरूष जाति के देवता, मनुष्य, मृग अथवा पक्षी के द्वारा उनकी मृत्यु न हो। बल के घमण्ड तथा वर के अभिमान में आकर उन्होने स्वर्ग पर आक्रमण करके देवताओं के यज्ञभाग छीन लिए और सभी को स्वर्ग से निकाल दिया। देवताओं की स्तुति से प्रसन्न होकर माँ भगवती ने उनको अभय कर दिया। तदुपरान्त वे **कौशिकी** और **कालिका** के रूप में प्रकट हो गईं। कौशिकी के रूप को देखकर शुम्भ ने सुग्रीव को दूत बनाकर उनसे विवाह का प्रस्ताव भेजा। कौशिकी ने कहा, जो मुझे युद्ध में पराजित कर देगा, वही मेरा पाणिग्रहण कर सकेगा। शुम्भ ने इस चुनौती को सुनकर अपने सेनापतियों क्रमशः धूम्रलोचन, चण्ड मुण्ड और रक्तबीज को विशाल सेना के साथ भेजा, जो माँ कालिका के हाथों मारे गये। अन्त में निशुम्भ और शुम्भ का भी वध हो गया। चण्डमुण्ड को मारने से **चामुण्डा** और शिव को अपना दूत बना कर भेजने से **शिवदूती** नाम से देवी विख्यात हुई।

राजा सुरथ और समाधि वैश्य की कथा– माँ भगवती की आराधना सबसे पहले स्वारोचिष नामक मन्वन्तर में राजा सुरथ और समाधि वैश्य ने की थी। कोलाविध्वंसी नामक क्षत्रियों और दुरात्मा मन्त्रियों से परास्त और दुखी होकर राजा सुरथ सुमेधा मुनि के आश्रम में रहने लगे। वहीं परिवार से परित्यक्त समाधि वैश्य से उनकी भेंट हो गई। दोनों ही दुखी थे। मुनि ने उनको माँ जगदम्बा की आराधना करने का उपदेश दिया। दोनों नवाक्षर मंत्र का जाप करने लगे। तीन वर्ष की तपस्या के बाद माँ भगवती ने उनको इच्छित वर दिया– राजा सुरथ ने राज्य माँगा, तो उन्होने 10000 वर्ष तक पृथ्वी पर राज्य किया और समाधि वैश्य ने मोक्ष के लिए ज्ञान माँगा, तो वे ज्ञान पाकर जीवन मुक्त हो गये।

शिवपूजा में केतकी पुष्प का निषेध– एक बार ब्रह्मा और विष्णु में श्रेष्ठता के प्रश्न पर विवाद हो गया। उसी समय एक शिवलिंग प्रकट हुआ और आकाशवाणी हुई कि जो इस शिवलिंग के ओर छोर का पहले पता लगाएगा, वही श्रेष्ठ माना जायेगा। विष्णु बिना

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा। फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719666777
ई मेल : mail@bhavishydarshan.in

से क्षमा माँगी और त्रिंशकु (सत्यव्रत) को दिव्य शरीर प्रदान किया।

राजा हरिश्चन्द्र की कथा– राजा हरिश्चन्द्र राजा सत्यव्रत (त्रिंशकु) के पुत्र थे। विश्वामित्र ने राजा सत्यव्रत को गौहत्या के शाप से मोचित करने के लिए यज्ञ किया और वे राजा स्वर्ग चले गये। कालान्तर में हरिश्चन्द्र ने राजसूय यज्ञ का होता गुरू वसिष्ठ को बनाया। यह जानकर विश्वामित्र कुपित हो उठे और वसिष्ठ से शर्तलगा कर हरिश्चन्द्र को सत्य धर्म से भ्रष्ट करने का उपक्रम करने लगे। विश्वामित्र ने कपट पूर्वक ब्राह्मण वेश में राजा से सम्पूर्ण राज्य दान में मांगा और राजा ने सारा राज्य दे दिया। बाद में विश्वामित्र ने दान की सिद्धि के लिए राजा से ढाई भार सोना दक्षिणा के रूप में माँगा–राजा ने दक्षिणा देने का वचन दिया। दक्षिणा की व्यवस्था के लिए तीनों बिकने हेतु काशी गये। रानी और पुत्र को एक ब्राह्मण ने और राजा को श्मशान के चाण्डाल ने खरीद लिया। तदनन्तर राजा दक्षिणा ऋण से मुक्त हो गए। सर्पदंश से पुत्र रोहित की मृत्यु, रानी को बालघातिनी राक्षसी समझकर चाण्डाल को सौंपना, चाण्डाल द्वारा हरिश्चन्द्र को रानी के वध की आज्ञा देना, रानी का रोहित के शव पर विलाप करना, राजा का दोनों को पहचानना, तीनों को चिता में जल जाने की तैयारी करना, सभी देवताओं के आशीर्वाद से प्रजा सहित स्वर्ग जाना आदि चरित्रों का श्रवण इच्छित फल देने वाला है।

भगवती शताक्षी और शाकम्भरी की कथा – प्राचीन काल में हिरण्याक्ष के वंश में उत्पन्न रूरू का पुत्र दुर्गम नामक महा दैत्य था, जिसने कठोर तप करके ब्रह्मा जी से समस्त वेद और वेदमन्त्र प्राप्त कर लिए। देवताओं को हव्यभाग न मिलने से अकाल पड़ गया। इस विषम स्थिति को देखकर ब्राह्मणों की स्तुति से प्रसन्न होकर अनन्त नेत्रों से जलधारा गिराने से माँ भुवनेश्वरी को शताक्षी और शाक–फल प्रदान करने के कारण उन्हें शाकम्भरी का रूप धारण करना पड़ा। तदनन्तर माँ भगवती ने दुर्गम दैत्य को मार दिया और वे दुर्गा कहलाने लगी। गौरी और महालक्ष्मी भी शक्ति स्वरूपा हैं, जिनके सान्निध्य के बिना शंकर और विष्णु भी निस्तेज और शक्ति हीन हो जाते हैं।

सती और पार्वती का प्राकट्य और शक्ति पीठों की उत्पत्ति – दक्षप्रजापति के यहाँ सत्यस्वरूपा सती का जन्म हुआ, जिनका विवाह भगवान शंकर के साथ हुआ। एक बार दुर्वासा ऋषि को माँ भगवती ने अपने गले की माला प्रसाद में दी। तदनन्तर ऋषि ने वह माला दक्ष को दे दी। दक्ष ने वह माला शयन के पलंग पर रख दी। रात में हुए पशुकर्म के प्रभाव से वे शंकर और सती से द्वेष भाव रखने लगे। उसी के कारण सती ने अपने शरीर को योगाग्नि से भस्म कर दिया। फिर वही ज्योति हिमाचल के घर पहुँच गई। दक्ष का सिर वीरभद्र ने काट डाला। बाद में देवताओं की प्रार्थना पर बकरे का सिर लगाकर दक्ष को जीवित कर दिया। दुखी होकर शिव सती के मृत शरीर को कन्धे पर रख कर जगत में भ्रमण करने लगे। विष्णु जी ने सती के अंगों को धनुष से काट डाला। 108 की संख्या में कटे वे अंग जहाँ भी गिरे, वे स्थान 108 सिद्ध पीठ कहलाये।

उसी समय तारकासुर ने ब्रह्मा जी से यह वरदान प्राप्त कर लिया था कि भगवान शंकर के औरस पुत्र के द्वारा ही उसकी मृत्यु हो सकेगी। हिमालय की पुत्री के रूप में पार्वती का अवतार हुआ। तदनन्तर शिव पार्वती का विवाह हुआ। कार्तिकेय का जन्म हुआ और शिव पुत्र ने तारकासुर का वध किया।

देवी गीता– भगवती ने हिमालय को देवी गीता का उपदेश दिया और अष्टांगयोग तथा कुण्डलिनी जागरण की विधि बताई। माँ भगवती के 108 नामों की व्याख्या श्रीमद्देवीभागवत के सप्तम स्कन्ध के तीसवें अध्याय में की गई है। देवी को **ह्रीं** मन्त्र सबसे अधिक प्रिय है। इसी स्कन्ध के अध्याय 32–40 में देवी गीता स्वंय माँ भगवती के मुखार बिन्द से प्रकट हुई है, जिसमें तीर्थो, व्रतों और पूजन विधान का वर्णन किया गया है।

एवमादितः स्कन्ध 7, अध्याय 193, श्लोक 11305

अष्टम स्कन्ध (24 अध्याय-838 श्लोक)

वराहावतार की कथा– समस्त मन्वन्तरों के अधिपति तथा ब्रह्माजी के पुत्र स्वायम्भुव मनु आदि मनु हैं। उनकी पत्नी का नाम शतरूपा था। प्रजा की सृष्टि के लिए मनु और शतरूपा को माँ भगवती ने वरदान दिया। मनु ने जब सृष्टि करनी चाही, तो चारों ओर जल ही जल था। उन्होंने धरातल देने की प्रार्थना की। ब्रह्मा जी ने देवेश्वर का ध्यान किया, तो उनकी नासिका के अग्रभाग से एक वराह प्रकट हो गया। वराह रूप विष्णु जल में चले गये और पृथ्वी को अपने दाढ़ों पर उठाकर बाहर ले आये तथा जल के ऊपर स्थापित कर दिया। दैत्य हिरण्याक्ष ने विष्णु का मार्ग रोका, तो श्री हरि ने अपनी गदा से उसे मार डाला। ब्रह्मा जी की आज्ञा से मनु प्रजासृष्टि करने लगे।

मनु से दो पुत्र प्रियव्रत और उत्तानपाद तथा 3 कन्याएँ आकूति, देवहूति तथा प्रसूति हुई। प्रसूति का विवाह दक्ष प्रजापति से हुआ। सभी कन्याओं से देवता, मानव, पशु आदि पैदा हुए। प्रियव्रत ने पृथ्वी की सात बार परिक्रमा की, जिससे उनके रथ के पहियों के निशान से सात समुद्र और सात द्वीप बन गये। उन प्रियव्रत के 10 पुत्र हुए, जिनमें से 3 पुत्र वितरागी हो गये और सातपुत्रों को एक एक द्वीप का अधिपति बना दिया। उन द्वीपों में जम्बूद्वीप श्रेष्ठ द्वीप है– भारतवर्ष इसी का एक भाग है। जम्बू द्वीप में अन्य आठ वर्ष भी हैं। भारत वर्ष में श्री नारायण स्वंय विराजमान हैं जिनकी स्तुति सदैव नारद जी करते रहते हैं। भारत वर्ष की महिमा का वर्णन स्वंय विष्णु भगवान ने अध्याय 11 में किया है।

विभिन्न पर्वतों से निकलने वाली नदियों का वर्णन अध्याय 6 में किया गया है। सुमेरू पर्वत आठ पर्वतों से घिरा हुआ है। इस पर्वत के शिखर के मध्य में ब्रह्मा जी की पुरी हैं।

मासिक राशिफल

16 मार्च - 15 अप्रैल

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- लाभ होकर भी हानि का भय रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। मानसिक तनाव अधिक रहेगा। शत्रु से तनाव रहेगा। सम्पत्ति को लेकर विवाद होगें।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास मे क्रोध शक्ति मे वृद्धि होगी। धन हानि होने की सभांवना रहेगी। व्यवसाय मे रूकावटें आयेगीं। क्रोध शक्ति की वृद्धि होगी। शत्रु पक्ष कमजोर रहेगा। फालतू विवादों से परेशान रहेगें।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास में मानसिक तनाव अधिक रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। इस मास में क्रोध शक्ति की वृद्धि होगी।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। व्यर्थ के खर्चे बढ़ जायेंगे। धन लाभ होना भी संभव हैं। व्यवसाय में हानि होना भी संभव हैं। अपमान होने का भय रहेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– पत्नि से मनमुटाव होने की संभावना रहेगी। इस मास में वायु विकार जैसे रोग से ग्रस्त होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में आर्थिक हानि की प्राप्ति होगी। रोग होने का भय रहेगा। प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति बनने की संभावना रहेगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सम्पत्ति को लेकर विवाद होगें। व्यवसाय में हानि होना भी संभव हैं। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में धन हानि होने की संभावना रहेगी।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस माह में शरीरिक पीड़ा रहेगी। प्रियजनों से अनबन होने की संभावना रहेगी। सन्तान पक्ष से चिन्ता बनी रहेगी। सम्पत्ति का लाभ होगा। मित्रों से पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास में आपको हानि होने का भय रहेगा। मित्रों से अनबन होने की स्थिति बनेगी। फालतू के विवादो से बचें। पत्नि को शरीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- आर्थिक लाभ का सुख प्राप्ति होगा। नेत्र कष्ट रहेगा। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। मास के अन्त में हानि होने का भय रहेगा। शत्रु पक्ष कमजोर रहेगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में शारीरिक कष्ट होने की सभांवना रहेगी। प्रियजनों से अनबन होने की संभावना रहेगी। धन की हानि होना भी संभव हैं। कार्य में हानि होने की सभांवना रहेगी। पत्नि सुख की प्राप्ति होगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। धन हानि होने की सभांवना रहेगी। नेत्र कष्ट होने की संभावना रहेगी। स्थान परिवर्तन होने की सभांवना रहेगी। फालतू के विवादो से बचें।

मीन(PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- इस मास में आपका स्वास्थ्य मधयम रहेगा। कारोबार मे हानि होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव की स्थिति बनेगी। आय से ज्यादा व्यय करेगें। इस मास में स्थान परिवर्तन होने की सभांवना रहेगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद, हस्ताक्षर विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

मार्च	अप्रैल
16 पूर्णिमा व्रत, पूर्णिमा होलिका दहन **17** धुलैड़ी (बसंत उत्सव) **20** श्री गणेश चतुर्थी व्रत **21** रंग पंचमी **22** एक नाथ षष्ठी, **23** भानु सप्तमी पूजन **24** शीतलाष्टमी पूजन, बासौड़ा (ठंडा वासी भोजन) **27** पापमोचनी एकादशी व्रत **28** प्रदोष व्रत **30** अमावस्या**31.**नवरात्रा प्रारम्भ (प्रतिपदा)	**1.**द्वितीय नवरात्रा, मूर्ख दि., वि. स्वा. दि. **2.**तृतीय नवरात्रा, गणगौर व्रत **3.**चतुर्थ नवरात्रा **4.**श्री पंचम **5.**स्कन्द षष्ठी **6.**भानु सप्तमी **7.** दुर्गाष्टमी व्रत, **8.**राम नवमी, स्वा. नारायण जं. **11.**कामदा एकादशी व्रत **12.**प्रदोष व्रत, महावीर स्वा. जं.,वमन द्वादशी, **14.**पूर्णिमा व्रत, श्री शिवदमनक, डॉ. भीम राव अम्बेडकर जं. **15.**पूर्णिमा, श्री हनुमान जयंती

ग्रहारम्भ मुहूर्त

मार्च– नही है। **अप्रैल**– नही है।

गृह प्रवेश मुहूर्त

मार्च– नही है। **अप्रैल** – नही है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

मार्च–16, 17

अप्रैल–4, 12, 13

नामकरण संस्कार मुहूर्त

मार्च– 19

अप्रैल– 13

सर्वार्थ सिद्ध योग

मार्च	अप्रैल
16 ता. 12:24 से सू.उ. तक	01 ता. सू.उ. से 23:55 तक
21 ता. 16:29 से सू.उ. तक	13 ता. सू.उ. से 29:54 तक
23 ता. 15:19 से सू.उ. तक	
30 ता. सू.उ. से 25:30 तक	

जी के कोप से बचने के लिए गंगा श्री कृष्ण के चरण कमल में प्रवेश कर गयी। ब्रह्माजी की स्तुति से राधा प्रसन्न हो गई और गंगा को अभय कर दिया। गंगा चरण कमल से निकलकर ब्रह्मा जी के कमण्डल में स्थित हो गई। कालान्तर में श्री हरि ने गंगा से गान्धर्व विवाह करके अपनी पत्नी बना लिया।

तुलसी का कथा प्रसंग– लक्ष्मी, सरस्वती, गंगा और तुलसी भगवान विष्णु की पत्नियाँ है। गोलोक में तुलसी नाम की गोपी का श्री कृष्ण के प्रति बहुत अनुराग था। राधा जी के शाप के वशीभूत वह गोपी धर्मध्वज की पुत्री हुई। गोलोक में सुदामा नाम का एक गोप भी था, वह भी राधा जी के कोप के कारण शंख चूड़ दानव बना। तुलसी और शंख चूड़ का गान्धर्व विवाह हुआ। ब्रह्मा जी का वर प्राप्तकर उस दानव ने स्वर्ग पर अपना अधिकार कर लिया। विष्णु के परामर्श से भगवान शंकर ने शंख चूड़ को मार दिया और स्वंय विष्णु ने छल से तुलसी का सतीत्व नष्ट किया। पतिव्रता तुलसी को विष्णु के द्वारा अपने सतीत्व के नष्ट होने की जानकारी हुई, तो उसने विष्णु को पत्थर की शिला होने का शाप दे दिया। तुलसी की करूणामयी स्थिति देखकर विष्णु जी ने समझाया कि तुम्हारा यह शरीर गण्डकी नदी के रूप में प्रसिद्ध होगा और तुम्हारे केश एक वृक्ष के रूप में प्रकट होंगे, जो तुलसी नाम से जाने जायेंगे। देवपूजन में पुष्पों और पत्रों में तुम्हारी प्रधानता होगी। तुम सदैव मेरे साथ ही रहोगी। मैं भी तुम्हारे शाप से पाषाण बनकर गण्डकी नदी के तट पर निवास करूँगा। शालिगराम और तुलसी का सान्निध्य सभी देवस्थानों पर रहता है। शंख चूड़ से शंख जाति पैदा हुई, जो देवपूजा में पवित्र माना जाता है। कुशध्वज की पुत्री वेदवती त्रेतायुग में जनक की पुत्री सीता हुई, जो श्री राम की पत्नी बनी। पुनः अग्नि में रही सीता की छाया द्वापर में द्रुपद की कन्या द्रौपदी के रूप में पैदा हुई। द्रौपदी ने पति प्राप्ति के लिए शंकर उपासना की और व्यग्र होकर पति प्राप्ति हेतु पाँच बार प्रार्थना की। इसलिए वे पाँचों पाण्डव की प्रिय पत्नी बनी।

भगवती सावित्री का उपाख्यान– मद्रदेश के राजा अश्वपति और रानी मालती को भगवती की कृपा से एक सावित्री नाम की कन्या प्राप्त हुई। सत्यवान के साथ उसका विवाह हुआ। एक वर्ष के अनन्तर किसी वृक्ष से गिर जाने से सत्यवान की मृत्यु हो गई। उसके सूक्ष्म शरीर को जब यमराज ले जाने लगे, तो सावित्री भी उनके पीछे जाने लगी। धर्मराज ने सावित्री से वापस जाने को कहा, वह नहीं लौटी। सावित्री ने यमराज की स्तुति की। यमराज ने प्रसन्न होकर सावित्री से वर माँगने के लिए कहा। सावित्री ने यमराज से वर माँगे कि सत्यवान से मुझे सौपुत्र प्राप्त हों, मेरे पिता के भी सौ पुत्र हों, मेरे श्वसुर को नेत्र ज्योति मिल जाये और उनको राज्य भी प्राप्त हो जाय। अन्त में, एक लाख वर्ष बीतने के पश्चात् मैं सत्यवान के साथ श्री हरि के धाम चली जाऊँ।

धर्मराज तथास्तु कहकर अपने लोक को और सावित्री अपने पति के साथ चली गई। ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को भगवती सावित्री का व्रत स्त्रियों के लिए अखंड सौभाग्य दायक होता है।

भगवती लक्ष्मी का प्राकट्य– राजा इन्द्र एक बार बैकुण्ठधाम से कैलाश की ओर जा रहे थे। मार्ग में दुर्वासा मुनि को प्रणाम किया। उन्होंने इन्द्र को पारिजात का पुष्प प्रसन्न होकर दिया, जिसे मदोन्मत्त इन्द्र ने ऐरावत हाथी के ऊपर फेंक दिया। दुर्वासा ने इन्द्र को श्री हीन होने का शाप दे दिया। विष्णु जी ने लक्ष्मी जी को क्षीर सागर के यहाँ जन्म लेने की आज्ञा प्रदान की। समुद्र मन्थन के समय अन्य रत्नों के साथ लक्ष्मी जी का प्राकट्य हुआ और उन्होने विष्णु को वरमाला पहना दी। तदुपरान्त देवगण दुर्वासा के शाप से मुक्त हो गए।

भगवती स्वाहा का उपाख्यान– यज्ञ के समय अग्नि में हवि का आहार देवताओं को नहीं मिलता था। समस्त देवताओं द्वारा की गई मूल प्रकृति भगवती की आराधना से स्वाहा देवी प्रकट हुई। उन्होंने अग्नि की दाहिकाशक्ति बनने की प्रार्थना को स्वीकार नहीं किया। कालान्तर में श्री कृष्ण ने स्वाहा देवी से कहा कि तुम वराह कल्प में मेरी भार्या बनोगी, इस समय तुम अग्नि देव की दाहिका शक्ति के रूप में पत्नी बनो। स्वाहा का अग्नि देव से विवाह हो गया। तभी से मन्त्र के अन्त में स्वाहा बोलने से देवताओं को आहुतियाँ मिलने लगीं।

भगवती स्वधा का उपारव्यान– पितरों के लिए किसी व्यक्ति द्वारा जो श्राद्धीय पदार्थ अर्पण किया जाता था, उसे पितृगण प्राप्त नहीं कर पाते थे। भूख से व्याकुल पितरों ने ब्रह्मा जी की प्रार्थना की। तब ब्रह्मा जी ने स्वधा नाम की एक मानसीकन्या का सृजन किया, जो पितरों की पत्नी बनी। फिर ब्राह्मणों से कहा कि पितरों को श्राद्ध सामग्री अर्पण करते समय स्वधायुक्त मंत्र का उच्चारण करें। पितृगण सन्तुष्ट हो गये।

श्रीमद्देवीभागवत पुराण के ग्यारहवें स्कन्ध में सदाचार एंव शौचाचार का वर्णन किया गया है। सदाचार से देवी प्रसन्न रहती हैं और शौचाचार तन शुद्धि के लिए आवश्यक है।

रूद्राक्ष का आख्यान– भगवान शंकर त्रिपुरासुर के वध के लिए 1000 वर्षों तक अघोर अस्त्र का चिन्तन करते रहे, उस समय उनके नेत्रों से जल की बूंदे गिरने लगी, जिससे रूद्राक्ष के बड़े–बड़े वृक्ष उत्पन्न हो गये। शिव के दाहिने नेत्र से कपिल वर्ण, बायें नेत्र से श्वेत वर्ण और तीसरे नेत्र से कृष्ण वर्ण के रूद्राक्ष पैदा हुए। ये रूद्राक्ष एक से चौदह मुख तक के होते हैं। रूद्राक्ष धारण करने वाला साक्षात् शिव स्वरूप हो जाता है।

विन्ध्य पर्वत पर एक गर्दभ रूद्राक्ष ढ़ोया करता था। एक दिन रूद्राक्ष का बोझा ढ़ोते हुए गिरने से उसकी मृत्यु हो गई। रूद्राक्ष के स्पर्श के ही प्रभाव से वह शिव लोक चला गया।

कोसल देश में गुणनिधि नामक का एक ब्राह्मण रहता था। उसने अपने गुरू की पत्नी मुक्तावली को मोहित कर लिया। बाद में, गुरू से भय के कारण उसने गुरू को विष देकर मार डाला। तत्पश्चात् सुरापान से निरन्तर मदोन्मत्त रहने लगा। धनहीन हो गया। कालान्तर में गुणनिधि मर गया। उसे लेने के लिए यमदूत आये, तो उसी समय शिव के गण भी आ गये और बोले कि जिस स्थान पर इसकी मृत्यु हुई है, उस भूमि के दस हाथ नीचे रूद्राक्ष विद्यमान है, इसलिए हम इसे शिवलोक ले जायेंगे।

भगवान शंकर की कृपा पाने के लिए भस्मधारण करना भी आवश्यक है। एक समय ऋषि दुर्वासा अपने सर्वांग में भस्म धारण किए हुए और रूद्राक्ष के आभूषण पहने हुए पितृ लोक गये। दुर्वासा मुनि कुम्भी पाक नरक भी गये। भस्म के कुछ कण नरक में गिरने से पापियों को स्वर्ग सुख का अनुभव होने लगा। बाद में वह कुम्भी पाक पितृ तीर्थ हो गया और पित्रीश्वरी देवी की मूर्ति की स्थापना की। बाद में कुम्भी पाक नरक अन्यत्र बनाया गया।

भगवती की पंचायतन पूजा– इस पूजा में शिवा, शिव, गणेश, सूर्य और विष्णु की अर्चना करनी चाहिए। इसमें मण्डप के मध्य में भवानी, ईशान कोण में विष्णु, अग्निकोण में शंकर, नैऋत्य कोण में गणेश और वायव्य कोण में सूर्य की पूजा होती है। सोलह ऋचाओं का पाठ करना चाहिए। विष्णु पर चावल, गणेश पर तुलसी, दुर्गा पर दूर्वा और शिव पर केतकी पुष्प नहीं चढाने चाहिए।

एवमादितः स्कन्ध 11, अध्याय 304, श्लोक 17037

द्वादश स्कन्ध (14 अध्याय–963 श्लोक)

गायत्री जप का माहात्म्य– गायत्री जप अत्यन्त मंगलकारी, सिद्धिदाता, महापापों का विनाशक और भगवती को प्रसन्न करने वाला है। गायत्री मन्त्र में 24 अक्षर, 24 ऋषि, 24 छन्द, 24 देवता, 24 रंग, 24 तत्व और 24 मुद्राएँ हैं। अथर्ववेद में वर्णित गायत्री हृदय के ऋषि स्वंय श्री विष्णु हैं। गायत्री कवच को धारण करने से मनुष्य ब्रह्म स्वरूप हो जाता है। गायत्री स्तोत्र और गायत्री सहस्त्रनाम स्तोत्र का जप उन्नतिकारक और भाग्योदय करने वाला है। गायत्री जप की दीक्षा श्रेष्ठ गुरू से विधि विधान से लेनी चाहिए।

गौतम मुनि पर गायत्री की कृपा– एक बार वृष्टि न होने से अकाल पड़ गया, लेकिन गायत्री की कृपा से गौतम मुनि का आश्रम धनधान्य से परिपूर्ण था। अन्य ब्राह्मणों ने यह जानकर गौतम मुनि के आश्रम जाने का विचार किया। बाह्मण वहाँ पहुँचे और मुनि ने उनको दैनिक उपयोग की समस्त वस्तुएँ प्रदान की। ब्राह्मण वहीं रहने लगे। गौतम मुनि की प्रतिष्ठा से द्वेष रखने वाले ब्राह्मणों ने माया से एक मरणासन्न वृद्ध गाय की रचना की। गाय को यज्ञ शाला की ओर जाने से मुनि ने रोका। उसी समय माया रचित गाय के मर जाने से गौतम मुनि पर गौहत्या का आरोप लगा। गौतम मुनि ने समाधि लगाई, तो सच्चाई पता चल गयी। मुनि ने ब्राह्मणों को शाप दे दिया। तदनन्तर ब्राह्मणों ने क्षमा याचना माँगी। मुनि ने सभी ब्राह्मणों से भगवती गायत्री का जप करने को कहा।

माँ भगवती द्वारा देवताओं का गर्वभंजन – भगवती की कृपा से प्राप्त विजय को देवता अज्ञान वश उसे अपने पराक्रम से मिली विजय समझकर गर्व करने लगे थे। यह देखकर दयामयी माँ जगदम्बा एक यक्ष के रूप में प्रकट हुई और अग्नि देव के समक्ष एक तिनका रखकर उसे जलाने को कहा, परन्तु वे जला नहीं सके। इसी प्रकार वायुदेव भी उसे उड़ा नहीं सके। तत्पश्चात् अभिमानपूर्वक इन्द्र उस यक्ष के पास गये। उनके पहुँचते ही वह यक्ष अर्न्तध्यान हो गया। इन्द्र लज्जित हो गये और यक्ष के बात न करने के कारण वे स्वंय को अपमानित समझने लगे। तदनन्तर इन्द्र के जप से प्रसन्न होकर हैमवती भगवती शिवा ने कहा कि तुम समस्त देवता मेरी ही शक्ति से सम्पन्न हो और उसी शक्ति से तुम सभी ने दैत्यों पर विजय प्राप्त की है। अतः तुम्हें किसी प्रकार का गर्व नहीं करना चाहिए। यह सुनकर सभी देवता माँ भगवती के चरणों में नतमस्तक हो गये।

मणिद्वीप धाम का चित्रण– ब्रह्म लोक से ऊपर के भाग में मणिद्वीप धाम स्थित है, जिसमें भगवती अपनी चौंसठ कलाओं के साथ विराजमान रहती हैं। जिसप्रकार भगवान शिव का लोक कैलाश और विष्णु का बैकुण्ठ व गोलोक हैं, उससे भी श्रेष्ठ धाम पराम्बा भगवती का मणिद्वीप धाम है। यह मणिद्वीप तीनों लोकों का छत्र स्वरूप है, जो ब्रह्मा, विष्णु और शिव के धाम की रक्षा करता है। इस मणिद्वीप में रत्नों से युक्त नौ प्रासाद हैं।

त्रिकोण के मध्यभाग में माँ भगवती का चिन्तामणि नाम का भवन है, जिसमें हजार खम्भों वाले चार मण्डप– श्रंगार मण्डप, मुक्ति मण्डप, ज्ञान मण्डप और एकान्तमण्डप विद्यमान हैं। इस पुराण के 12 वें स्कन्ध के अध्याय 8 से 12 तक का पाठ नये भवन के निर्माण तथा वास्तुयज्ञ के अवसर पर अवश्य करना चाहिए।

राजा जनमेजय द्वारा यज्ञ– राजा जनमेजय ने श्रीमद्देवीभागवत सुनकर मुनियों को बुलाकर अम्बा यज्ञ सम्पन्न कराया। यज्ञ पूरा होते ही राजा परीक्षित दिव्य शरीर धारण करके माँ भगवती के मणिद्वीप धाम को चले गये। इस प्रकार देवी भागवत के अनुष्ठान से राजा परीक्षित को उत्तम गति प्राप्त हुई। **एवमादितः स्कन्ध12, अध्याय 318, श्लोक 18000**

❋❋❋